13/7/21

बिहार के वन एवं वन्यजीव अभ्यारण :—

बिहार का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी० है, और यह उपोष्ण जलवायु क्षेत्र में अवस्थित है। बिहार के कुल घोषित वन क्षेत्र 7299 वर्ग किमी० है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 7.8% है।

ये प्राकृतिक वन – पश्चिमी चम्पारण, कैमुर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, जहानाबाद, नवादा, नालंदा, मुंगेर, बाँका और जमुई जिले में फैला हुआ है। पश्चिमी चम्पारण को छोड़कर उत्तर बिहार प्राकृतिक वनो से रहीत है।

शिवालिक के तराई क्षेत्रों में पश्चिमी चम्पारण जिले में प्राकृतिक साल के वन मिलते है। इसके अलावा दक्षिण बिहार में कैमुर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, जम्मुई, मुंगेर और बाँका जिले में भी साल के वन प्रचुरमात्रा में पाए जाते है।

बिहार के प्राकृतिक वन में पर्णपाति किस्म के वनों की बहुलता है। वर्षा वितरण की असमान्यता के कारण यहाँ आर्द्र एवं शुष्क दोनों प्रकार के वन पाए जाते है।

बिहार में वनों का वर्गीकरण निम्नलिखित तरीके से कर सकते है।

बिहार की प्राकृतिक वनस्पति

आर्द्र पर्णपाति वन — शुष्क पर्णपाति वन

1) आर्द्र पर्णपाति वन :—

इस प्रकार के वन वैसे क्षेत्रों में पाए जाते है जहाँ वार्षिक वर्षा 120cm से भी अधिक होती है।

आर्द्र पर्णपाति वनों के अन्तर्गत सोमेश्वर एवं द्रुनश्रेणी के वन तथा तराई क्षेत्र के वन आते है। सोमेश्वर एवं द्रुनश्रेणी के वनों का विस्तार मुख्य रूप से पश्चिमी चम्पारण क्षेत्रों में है। इस क्षेत्र में लगभग 150cm से ऊपर वर्षा होती है। यहाँ की उच्च भूमियों एवं पहाड़ी ढालो पर पाए जाने वाले वनों में साल, सेमल, खैर, सिसम, इत्यादि वृक्षों की प्रधानता है। सोमेश्वर एवं द्रुनश्रेणीयों में ऊँचाई के कारण समान प्रकार के वनस्पतियाँ भी देखी गई है।

तराई क्षेत्र के वन भारत-नेपाल सीमा से सटे क्षेत्रों में पाए जाते हैं। तराई क्षेत्र का उत्तरी-पश्चिमी तथा उत्तरी पूर्वी भाग इस प्रकार के वनों से अच्छादित हैं।

निम्न दलदली भूमि में पाए जाने वाली वनस्पतियाँ यहाँ अधिकांस रूप से पाई

जाती है। घास, हाथीघास, नरकट, झाड़, बाँस, सबई, इत्यादि इस प्रकार के वन पुर्णिया, किशनगंज, अररीया एवं सहरसा जिलों में संकिरण पट्टी के रूप में पाई जाती है। जबकि सहरसा तथा पुर्णियाँ के उत्तरी सीमांतर क्षेत्र में सालवृक्षों के वनों की पट्टीयाँ पाई जाती है। सिवालीक के तराई क्षेत्र में पश्चिमी चम्पारण जिले में प्राकृतिक साल के वन पाए जाते हैं।

14/7/21

शुष्क पर्णपाति वन :—

बिहार में शुष्क पर्णपाति वनों का विस्तार राज्य के पुर्वी मध्यवर्ती भाग एवं दक्षिणी पठार के पश्चिमी भाग में है। ये वैसे क्षेत्र हैं जहाँ 120cm से कम वर्षा होती है। शुष्क पर्णपाति वनों में अम्लतास, आँवला, सिसम, महुआ, खैर, प्लास इत्यादि।

शुष्क पर्णपाति वन बिहार के जमुई, सहरसा, बाँका, नवादा, कैमुर, रोहतास, गया, औरंगाबाद इत्यादि

सुरक्षा की दृष्टि से बिहार के वनों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

i) आरक्षीत वन क्षेत्र
ii) संरक्षीत वन क्षेत्र
iii) अवर्गीकृत वन क्षेत्र

बिहार में आरक्षीत वन क्षेत्र का विस्तार 993 वर्गकिमी० के क्षेत्रफल में है। वही संरक्षीत वन क्षेत्र 5779 वर्ग किमी० में फैला है, एवं अवर्गीकृत वन क्षेत्र मात्र 452 वर्ग किमी० में फैला है। इसके अलावे बिहार राज्य वन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार बिहार में कुल प्रतिशत क्षेत्रफल में 3.89 % खुला है।

3.59 % समाच्य वन 0.26 % अतिसघन वन तथा 0.12% झाडीवन है।

जिला का नाम	भौगोलिक क्षेत्र (वर्ग किमी. मे)	कुल वन क्षेत्र (वर्ग किमी.	प्रतिशत (जिला के भौगोलिक क्षेत्र)
1) कैमुर	3,332	1102	32.59
2) औरंगाबाद	3,365	1544	4.96
3) अररिया	2,830	157	5.55
4) बांका	3020	232	7.68
5) जहानाबाद	931	3	0.32
6) जमुई	3098	641	20.63
7) गोपालगंज	2033	5	0.25
8) गया	4,976	607	12.2
9) दरभंगा	2,279	134	5.88
10) बक्सर	1,703	10	0.59
11) भोजपुर	2,395	35	1.46
12) बेगुसराय	1,918	84	4.33
13) भागलपुर	2,569	64	2.49
14) सीतामढ़ी	2,294	133	6.42
15) सीवान	2,219	7	0.32
16) सुपौल	2,425	132	5.43
17) वैशाली	2,036	92	4.52
18) अरवल	638	2	0.32
19) पं० चम्पारण	5,228	899	17.2

20)	पटना	3,202	24	0.78
21)	शिवहर	349	30	5.24
22)	शेखपुरा	689	1	0.16
23)	सारण	2,641	53	2.01
24)	समस्तीपुर	2,904	156	5.37
25)	सहरसा	1687	32	1.90
26)	रोहतास	3,881	706	18.42
27)	पुर्णीया	3,229	53	1.64
28)	पुर्वी चम्पारण	3969	156	3.93
29)	कटिहार	3,057	61	2.00
30)	खगड़िया	1,486	21	1.41
31)	किशनगंज	1,884	101	5.36
32)	लखीसराय	1,228	201	14.82
33)	मधेपुरा	1,788	51	2.85
34)	मधुबनी	3,501	198	5.66
35)	मुंगेर	1,419	267	19.82
36)	मुजफ्फरपुर	3,172	142	4.48
37)	नालंदा	2,355	32	1.35
38)	नवादा	2,494	509	20.41

बिहार का प्रमुख वन्यजीव अभ्यारण —

i) भिमबांध वन्य जीव अभ्यारण —

यह वन्यजीव अभ्यारण मुंगेर जिले में स्थित है। इसकी स्थापना 1976 ई० में हुई थी। यह अभ्यारण 681.99 वर्ग किमी० क्षे० में फैला हुआ है।

यहाँ तेंदुआ, भालु, सांभर, जंगली सुअर, भेड़िया, बंदर, लंगुर, निलगाय, मगरमच्छ, मोर इत्यादि।

मनोरम पहाड़ीयों, प्राकृतिक वादियों एवं घने जंगलों से घिरे भिमबांध में गर्म जल का असीमस्रोत है। ठंडे के दिनों में थुवाओं के लिए एक बेहतर पिकनिक स्रोत है।

ii) वरेला झील सलीम अली जुल्वा साहनी पक्षीवन्य अभ्यारण —

यह वन्य जीव अभ्यारण वैशाली जिले में स्थित है। इसकी स्थापना 1997 ई० में और यह 1.96 वर्ग किमी० में फैला है। यहाँ चीता, सांभर, हिरण, भालु, ओयल, गोरैया, मैना, तोता इत्यादि मिलती है।

iii) कैमुर वन्य जीव अभ्यारण –

कैमुर वन्य जीव अभ्यारण कैमुर जिले में अवस्थित है। और इसकी स्थापना 1979 ई० में हुई, यह लगभग 1342 वर्ग किमी० क्षेत्रफल में फैला है।

यहाँ भेड़िया, लैटक्स, चीतल, लंगुर इत्यादि वन्य जीव पाए जाते हैं।

यह सोन नदी के किनारे स्थित है।

iv) पंत / राजगीर वन्यजीव अभ्यारण —

यह वन्य जीव अभ्यारण नालंदा जिले में अवस्थित है। यह 35.84 वर्ग किमी० क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी स्थापना 1978 ई० में हुई, यहाँ भेड़, गाय, भालु, बन्दर, इत्यादि जीव पाए जाते हैं।

v) कावर झील पक्षी अभ्यारण —

इस पक्षी अभ्यारण की स्थापना 1989 में की गई थी। यह पक्षी अभ्यारण बिहार के बेगुसराय जिले में है। यह लगभग 63 वर्ग किमी० में फैला है। और यहाँ मुख्यरूप से साइबेरियन पक्षियाँ अधिक आती हैं।

vi) गौतम बुद्ध वन्य जीव अभ्यारण —

यह अभ्यारण गया जिले में अवस्थित है। यह लगभग 260 वर्ग किमी० क्षेत्र में फैला है। इसकी स्थापना 1976 ई० में हुई। यहाँ तेंदुआ, चीता, सांभर, हिरण, इत्यादि पशुएँ पाई जाती हैं।

vii) वाल्मीकि वन्य जीव अभ्यारण —

यह वन्य जीव अभ्यारण पश्चिमी चम्पारण जिले में है। इसका क्षेत्रफल 899 वर्ग किमी० में है। यह राष्ट्रीय उद्यान और टाईगर रिजर्व है। इसकी स्थापना 1978 ई० में हुई थी।

viii) नक्कटीदैन पक्षी अभ्यारण —

ये जमुई जिले में स्थित है और इसकी स्थापना 1987 ई० में हुई। इसका क्षेत्रफल 3.32 वर्ग किमी० है। यहाँ कोयला, मैना, गौरैया, तोता, गिलहरी, इत्यादि जीव पाए जाते हैं।

xi) नागीडैम पक्षी अभ्यारण :—

यह बिहार के जमुई जिले में है। इसकी स्थापना 1987 ई० में हुई यह 7.90 वर्ग किमी० में फैला है।

x) उदयपुर वन्यजीव अभ्यारण — यह पश्चिमी चम्पारण जिले में है। इसका क्षेत्रफल 8.74 वर्ग किमी० है। इसकी स्थापना 1978 ई० में हुई।

संजयगाँधी जैविक अभ्यारण — यह पटना में स्थित चिड़ियाँ घर एवं जैविक उद्यान है। इसकी स्थापना 1969 ई० में हुई थी। यह 153 वर्गकिमी० क्षेत्रफल में फैला है। इसमें गैंडा, जेब्रा, जिराफ, बाघ, मगरमच्छ, इत्यादि

BIHAR : Mineral Resources

बिहार में खनिज संसाधन —

i) चुनापत्थर —

चुनापत्थर बिहार के पश्चिमी भाग में विद्यांन शैल समूहों में भारी जमाव के रूप में पाया जाता है।

बिहार में चुनापत्थर का प्रयोग सिमेंट के निर्माण में कच्चेमाल के रूप में किया जाता है।

बिहार में गुणवता युक्त श्रेणीका चुनापत्थर रोहतास की पहाडीयों, कैमुर का पठार तथा मुंगेर में मिलता है। रोहतास जिले में चुनापत्थर का कुल अनुमानीत भंडार 21.085 मिलियन टन होता है।

ii) मोनोजाईट —

ये खनिज बिहार में गया एवं मुंगेर जिले में मिलती है। मोनोजाईट, मैग्नेटाइट चट्टानों से प्राप्त होने वाला खनिज है।

iii) अभ्रक —

बिहार में अभ्रक की पेटी का विस्तार नवादा जिले के पुर्वी भाग से शुरू होकर झारखण्ड राज्य के गिरिडी जिले तक है। इसके अलावा जमुई जिले के चकाई,

बतीया, एवं चरका पत्थर क्षेत्र में भी देखने को मिलता है।

बिहार एवं झारखण्ड में विश्व का सबसे उच्च कोटी का रूबी अभ्रक मिलता है। अभ्रक गया के कुछ हिस्सों में भी पाए जाते हैं।

अभ्रक का उपयोग रबड़ उद्योग, पेन्ट, इलेक्ट्रोनिक उद्योग इत्यादि में उपयोग किए जाते हैं।

iv) कोयला —

कोयला का कुछ भण्डार, भागलपुर एवं मुंगेर जिले में पाए जाते हैं। भारतीय भारतीय भुगर्भ सर्वेक्षण के अनुसार 160 मिलियन टन कोयला भण्डार बिहार में है।

v) ग्रेफाइट —

ग्रेफाइट बिहार के भागलपुर, गया, जम्मुई, जहानाबाद, मुंगेर, नवादा इत्यादि जिलों में ग्रेफाइट का भण्डार है।

बिहार में काले ग्रेफाइट एवं रंगीन सजावटी ग्रेफाइट की उपलब्धता देखी गई है।

vi) बॉक्साइट —

बॉक्साइट का मुख्य भण्डार मुंगेर जिले की खड़गपुर की पहाड़ीयों में पाई जाती है।

और यहाँ लगभग 1.5 मिलियन टन बॉक्साइट का निक्षेप रोहतास जिले में है।

vii) लोह अयस्क —

इसका भण्डार बिहार में गया, भागलपुर तथा जमुई जिले में है। बिहार में मैग्नेटाइट किस्म का लौह अयस्क मिलता है।

viii) पायराइट —

भारत में बिहार एक मात्र ऐसा राज्य है जहाँ पायराइट का उचित भण्डार है। बिहार देश में एक ऐसा राज्य है जो 95% तक पायराइट का उत्पादन होता है।

पायराइट गंधक का स्रोत होता है, और इसका उपयोग पेट्रोलियम सोधक, ठोस रबर, चीनी होता है।

उर्वरक उद्योग, सलफर, एसी इत्यादि में होता है।

xi) सोना —

बिहार में जमुई जिले में सोनो प्रखण्ड में कुरमटीया नामक स्थान पर सोना का भण्डार है।

इसके अलावे पश्चिमी चम्पारण, और जालमीडीनगर क्षेत्र में सोना पाया जाता है।

x) स्लेट –

बिहार के मुंगेर जिले में खड़गपुर की पहाड़ीयों में स्लेट का भण्डार है। यहाँ काले एवं रंगीन दोनों प्रकार के स्लेट मिलते हैं।

खनिज / अयस्क	प्राप्ति स्थल जिले
अभ्रक	नवादा, जमुई तथा गया
सोना	जमुई तथा पश्चिमी चंपारण
चुना पत्थर	रोहतास तथा मुंगेर
पायराइट	रोहतास
ग्राफाइट	मुजफ्फरपुर, मुंगेर, सारण, दरभंगा तथा बेगुसराय
मैंगनीज	पटना, मुंगेर तथा गया
कोयला	भागलपुर तथा मुंगेर
लौह - अयस्क	गया, भागलपुर, तथा जमुई
ग्रेनाइट	भागलपुर, जहानाबाद, नवादा, मुंगेर, जमुई तथा गया
बॉक्साइट	मुंगेर तथा रोहतास
क्वार्टजाइट	मुंगेर, गया, जमुई, लखीसराय, तथा नालंदा
चीनी मिट्टी	भागलपुर, मुंगेर तथा बाँका
सोपस्टोन	जमुई
स्लेट	मुंगेर

बेरीलियम	गया
मोनोजाइट	मुंगेर तथा गया
एस्बेस्टस	मुंगेर
फेल्सपार	गया, जमुई तथा मुंगेर
क्वार्ट्ज	जमुई, गया तथा नवादा
युरेनियम	गया तथा नवादा
डोलोमाइट	रोहतास
पेट्रोलियम	किशनगंज, पश्चिम चम्पारण, सहरसा तथा पूर्णिया

बिहार के खनिज आधारित उद्योग —

बिहार राज्य खनिज के मामले में बहुत धनि है। फिर भी कुछ ऐसे खनिज है जो बिहार में बहुतायत रूप में पाए जाते है। जैसे चुनापत्थर, पायराइट, इत्यादि।
पायराइट के उत्पादन एवं उपलब्धता के मामले में बिहार देश में प्रथम स्थान पर है क्योंकि देश के 95% पायराइट का भण्डार बिहार में है। इस तरह बिहार स्वभाविक रूप से भारत का अग्रणीय उत्पादक बन जाता है। इस तरह के खनिजों की प्रचुर उपलब्धता किसी क्षेत्र में उद्योग की स्थापना के लिए अवसर प्रदान करती है।
बिहार में कुछ ऐसे स्थान है जहाँ खनिज की प्रचुर उपलब्धता के कारण बड़े-बड़े उद्योग की स्थापना की गई है। बिहार में खनिज आधारित कुछ प्रमुख उद्योगों का विवरण इस प्रकार है। —

सिमेंट उद्योग — बिहार में सिमेंट बनाने के लिए आवश्यक खनिज चुनापत्थर का असीम भण्डार है।
रोहतास की पहाड़ीयों एवं कैमुर की पहाड़ीयों में कच्चेमाल की प्रचुर उपलब्धता होने के कारण

रोहतास के बनजारी एवं डालमिया नगर में सिमेंट उद्योग की स्थापना की गई है। वर्तमान में वित्तीय एवं प्रबंधन की समस्या तथा ऊर्जा की पर्याप्त उपलब्धता न होने की वजह से डालमिया नगर कारखाना बन्द पड़ा हुआ है।

रासायनिक उद्योग —

बिहार में रासायनिक उद्योग का विकास रोहतास एवं बरौनी में अत्यधिक हुआ है। रोहतास में P.P.C.L की स्थापना की गई जो अमझोर नामक स्थान पर अवस्थित है। यह पायराइट आधारित उद्योग है एवं यहाँ पायराइट से गंधक एवं फॉस्फेट उर्वरक का निर्माण किया जाता है।

1982 ई० में बिहार सरकार के सार्वजनिक उपक्रम के रूप में "बिहार इन्स सेक्टीसाईटस लिमिटेड" की स्थापना की गई थी। जहाँ आधारभूत ~~संस्थ~~ रासायनिक का उत्पादन किया जाता था।

शिक्षा उद्योग —

बिहार के दक्षिणी क्षेत्र में शिक्षा की अधिकता है। में प्रयुक्त

होने वाले कुच्चेमाल की अधिकता है। पठारी क्षेत्र होने के कारण यहाँ बालू, सिलिका, चूनापत्थर इत्यादि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पटना, भागलपुर और दरभंगा शिल्प उद्योग के मुख्य केन्द्र हैं।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। और राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि की अपेक्षा खनिज का योगदान बहुत कम है। वर्तमान में खान एवं भूतत्व विभाग बिहार वित्तीय वर्ष 2007-8 से लगातार राजस्व वसूलि में बढ़ोतरी कर रहा है।

वित्तीय वर्ष 2018-19 में खान एवं भूतत्व विभाग द्वारा 1533 करोड़ रूपये वसूले गए हैं। यह पिछले वित्तीय वर्ष की अपेक्षा 41% अधिक है।

औद्योगिकरण एवं नियोजन —

किसी अर्थव्यवस्था के अन्तरगत जब कच्चे पदार्थों को उचीत एवं सुलभ तकनिक के माध्यम से उसके स्वरूप में परिवर्तन लाकर अधिक उपयोगी बना देना तथा निर्मित पदार्थों का उचीत तरीके से रख-रखाव करना इत्यादि उद्योग के अन्तरगत आता है।

किसी अर्थव्यवस्था में औद्योगीकरण एवं नियोजन हेतु निम्नलिखित की आवश्यकता होती है। जैसे - कच्चे माल की उपलब्धता, अत्यधिक कुशल सामग्री की उपलब्धता, उचीत आवागमन मार्ग / परिवहन का साधन, उचीत मात्रा में पुंजि की आवश्यकता, निर्मित वस्तुओं की बिक्री हेतु बाजार की सुविधा।

1) खाद्य प्रसंस्कीरण उद्योग —

यह उद्योग मुख्यत: कृषि एवं पशुपालन पर आधारित है। जिसके अंतरगत गेहूँ, मक्का, चावल, दुध उत्पादन, खाद्यतेल, फल, मखाना इत्यादि। आते है।

2016-17 के सर्वेक्षण के मुताबीक बिहार में अगस्त 2016 तक खाद्य प्रसंस्कीरण उद्योग की

लगभग 407 ईकाईयाँ स्थापित हुई। जिनमें से 278 ईकाईयाँ सुचालु रूप से काम कर रही है। जैसे - मखाना में प्रोटीन एवं कार्बोहाइड्रेट मिलते हैं। और इसका उत्पादन बिहार में मुख्य रूप से मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी में है।

मखाना सोधसंस्थान दरभंगा में स्थापित है। इसके अलावे वैशाली और मुजफ्फरपुर में लिची आधारित, रोहतास एवं कैमुर में अमरूद आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग स्थापित है।

चीनी उद्योग (Sugar Industry) — चीनी उद्योग को सुचालु रूप से चलने के लिए कुछ प्रमुख बाते महत्वपूर्ण है। जैसे जलोढ मिट्टी 200cm से अधिक वर्षा, उष्ण आर्द्र जलवायु सिंचाई की व्यवस्था, श्रम एवं बाजार की व्यवस्था।

बिहार में चीनी उद्योग का भौगोलिक वितरण —

दक्षिण पश्चिम बिहार — इसके अंतरगत चीनी मिल की 8 ईकाईयाँ स्थापित है जो पटना, रोहतास, नवादा, भोजपुर, गया इत्यादि।

ii) उत्तर पश्चिम बिहार —

इसके अन्तरगत चीनी मिल की 20 ईकाई स्थापित है। इसमें से प्रमुख ईकाईयों में सारण, शिवान, दरभंगा, वैशाली, गोपालगंज, पश्चिमी एवं पुर्वी चम्पारण इत्यादि।

कुल राष्ट्रीय स्तर पे चीनी उत्पादन का 2% ही बिहार में प्राप्त होता है।

दो चीनी मिले जो 'बिहार राज्य चीनी निगम" के अन्तरगत आते है। उन्हें 2011 में लिज (lon) के आधार पर HPCL को दिया गया है।

वर्तमान में कुल 28 चीनी मिलों में से सार्वजनिक क्षेत्र हेतु 19 है। जबकि निजी क्षेत्र के 9 है।

चीनी उत्पादन की मात्रा की दृष्टि से बिहार का 5 वाँ स्थान है।

वस्त्र उद्योग (Textile Industry) —

इस उद्योग के संचालन हेतु कच्चेमाल के रूप में कपास एवं जुट की आवश्यकता होती है। साथ ही साथ बुनकर एवं हथकरघा जैसे साधनों की आवश्यकता होती है।

वर्तमान समय में अधिक लोग कार्यरत है। हथकरघा क्षेत्र में कार्यरत लोगों की सहायता

हेतु बिहार में 2 विपनन संगठन हैं।
बिहार राज्य ऊन एवं भेड़संघ, बिहार हथकरघा सहकारी संघ। सूती वस्त्र के साथ-साथ बिहार में रेशम एवं तसर से निर्मित वस्त्र भी मसहूर है। "मुख्यमंत्री कोशी मलबरी योजना" के अन्तरगत कटीहार, पुर्णीयाँ, किशनगंज, अररीया, सुपौल, सहरसा, मधेपुर इत्यादि जिले आते हैं।
रेशम उद्योग हेतु भागलपुर सिल्क सीटी कहा जाता है।

बिहार के कुछ प्रमुख उद्योग

i) किशनगंज - चाय उद्योग
ii) छपरा - रेल पहिया उद्योग
iii) कटीहार - दिया - सलाय उद्योग
iv) लखीसराय - सिंदुर
v) पुर्णीया - जुट
vi) मुंगेर - बंदुक उद्योग, सिगरेट उद्योग
vii) मधेपुरा - स्लिपर उद्योग (कारखाना)
viii) मधेशी (पुर्वी चम्पारण) - बर्तन

खनिज पर आधारित उद्योग

उद्योग	विशेषताएँ
1) सिमेंट उद्योग	प्रमुख केंद्र रोहतास जिला के बंजारी में है। पोर्टलैंड सीमेंट का उत्पादन कल्याणपुर सीमेंट सीमेंट का सबसे बड़ा कारखाना डालमियानगर में स्थित है। औरंगाबाद में श्री सीमेंट जबकि मनुआ में ईकों सीमेंट स्थापित की गई है।
2) पत्थर उद्योग (पत्थर काटने का)	ग्रेनाइट, सिस्ट, नीस, आदि। चट्टानों पर आधारित उद्योग दक्षिण बिहार, खासकर गया, नवादा, जमुई, मुंगेर, कैमूर एवं रोहतास में बृहत् पैमाने पर विकसित है।
3) रासायनिक उद्योग	बरौनी तेल शोधन कारखाना सोवियत रूस एवं रोमानिया के सहयोग से जुलाई 1964 ई० में स्थापित। बरौनी ताप विद्युत केंद्र 1962 में स्थापित हुआ जिसका विद्युत

उत्पादन क्षमता 320 मेगावाट है।
रोहतास में पायराइट्स फॉस्फेट कारखाना स्थापित है।
पटना में बिहार इनसेक्टिसाइड्स लिमिटेड की स्थापना 27 Feb 1982 को की गई।

4) माल इंजीनियरिंग उद्योग

मालढुलाई के डिब्बे एवं तार की रस्सी बनाने हेतु, मोकामा में भारत वैगन एवं इंजीनियरिंग लिमिटेड की स्थापना की गई है।
रेलवे वैगन संयंत्र मुजफ्फरपुर में ऑर्वर बटलर कम्पनी में बनाए जाते हैं।
चमड़ा प्रसंस्करण उद्योग बरौनी एवं मुजफ्फरपुर में स्थापित है।

बाटा कम्पनी का बड़ा कारखाना मोकामा एवं दिघा में है।

कॉंच (शीशा) में संबंधित कारखाना पटना, भवानीनगर (अररिया) हाजीपुर में है।

वन पर आधारित उद्योग

उद्योग	विशेषताएँ
1) कागज एवं लुग्दी उद्योग	कागज उत्पादन हेतु प्रमुख कारखाना डालमिया नगर, एवं समस्तीपुर में जितवारपुर में है। यहाँ सर्वोत्तम श्रेणी के कागज, टीशूपेपर, सिम्पलैक्स बोर्ड, मुद्रण पत्र, टिकट बोर्ड एवं लुग्दी बोर्ड का उत्पादन होता है।
	ठाकुर पेपर मिल्स लिमिटेड कारखाना समस्तीपुर में है।
2) लकड़ी उद्योग	एशियन प्लाईवुड इंडस्ट्रीज हाजीपुर में स्थित है।
3) सिगरेट एवं बीड़ी उद्योग	ITC का सिगरेट कारखाना जो तंबाकू आधारित है, मुंगेर (दिलवारपुर) में स्थापित है।

बिहार के ऊर्जा संसाधन —

ऊर्जा किसी भी राज्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिखाती है। बिना ऊर्जा के कोई भी आर्थिक गतिविधि संभव नहीं है। इस मामले में बिहार पिछड़ा हुआ राज्य है। परंतु हाल के वर्षों में बिहार में ऊर्जा के क्षेत्र में विकास किया है। आज भी बिहार की लगभग 70% बिजली केन्द्र सरकार देती है। आर्थिक समीक्षा (2018-19) के अनुसार बिहार में प्रति व्यक्ति विद्युत की उपभोग दर 280kwh जबकि वर्ष 2018 तक राज्य में विद्युत की कुल उपलब्धता 4535 मेगावाट है।

अप्रैल 1958 बिहार राज्य विद्युत बोर्ड का गठन हुआ था। और इस बोर्ड को विद्युत उत्पादन, वितरण, संरचना एवं बिजली संबंधि अन्य गतिविधियों के प्रबंध की जिम्मेदारी दी गई।

बिहार में Nov 2012 में बोर्ड को पाँच भागों में बाँट दिया।

i) बिहार राज्य विद्युत (Holding) कम्पनि लिमिटेड
ii) बिहार राज्य विद्युत संरचना कम्पनि लिमिटेड
iii) दक्षिण बिहार विद्युत वितरण कम्पनि लिमिटेड
iv) बिहार राज्य विद्युत उत्पादन कम्पनि लिमिटेड
v) उत्तर बिहार राज्य विद्युत वितरण कम्पनि लिमिटेड।

बिहार के कुछ कार्यशील लघु जल विद्युत परियोजनाएँ —

1) कोशी जल विद्युत — सुपौल - 19.2 मेगावाट
2) सोवारी जल विद्युत परियोजना — रोहतास - 1 मेगावाट
3) सोन पुर्वी लिंगनहर जलविद्युत परियोजना — औरंगाबाद - 3.3 मेगावाट
4) बेलसार जल विद्युत परियोजना — अरवल - 0.70 मेगावाट
5) अगनुर जलविद्युत परियोजना — अलवर - 1 मेगावाट

बिहार राज्य के मुख्य तापीय संयंत्र परियोजनाएँ

i) बरौनी ताप विद्युत केन्द्र — बरौनी ताप विद्युत केन्द्र में अलग-अलग ईकाईयाँ है। उनमें से 5 क्रियाशील है।
ii) कांटी बिजली उत्पादन निगम लिमिटेड — 7।
iii) कहलगाँव ताप विद्युत संयंत्र
iv) नवीनगर ताप विद्युत केन्द्र इत्यादि।

पिछले कुछ सालों में सौर ऊर्जा पर भी ध्यान दिया जा रहा है। और बिहार के शहर एवं गाँवों में सूर्यताप ऊर्जा पर आधारित विद्युत का उपयोग किया जाता है।

BIHAR :- Population

बिहार की जनसं०

2011 की जनगन्ना के अनुसार बिहार की कुल जनसंख्या 10,40,99,452 है। इसमें पुरुष की जनसं० 5,42,78,157 (52.14%) है। जबकि महिलाओं की जनसं० 4,58,21,295 है (47.86%) है।

* बिहार की कुल जनसं० देश में तीसरे स्थान पे आती है। यहाँ भारत की कुल जनसं० का 8.60% जनसं० निवास करती है।

* बिहार में सर्वाधिक जनसं० वाला जिला पटना (58,38,465) है। जबकि न्युनतम जनसं० वाला जिला शेखपुरा (6,36,342) है।

* बिहार के पाँच सर्वाधिक जनसं० वाले जिले —

i) पटना (58,36,465)
ii) पुर्वी चम्पारण (50,99,371)
iii) मुजफ्फरपुर (48,01,062)
iv) मधुबनी (44,87,379)
v) गया (43,91,418)

* बिहार के न्युनतम जनसं० वाले जिले —

i) शेखपुरा (6,36,342)

ii) शिवहर (6, 56, 246)
iii) अरवल (700, 843)
iv) लखीसराय (10, 00, 912)
v) जहानाबाद (11, 25, 312)

बिहार की ग्रामीण जनसं०
बिहार की कुल ग्रामीण जनसं० (9, 23, 41, 436) (88.71) इनमें से पुरुष की जनसं० 5, 80, 73, 850 है।
महिलाओं की जनसं० 4, 42, 67, 586

* सर्वाधिक ग्रामीण जनसं० वाले जिले -
i) पुर्वी चम्पारण (46, 098, 028)
ii) मुजफ्फरपुर
iii) मधुबनी
iv) समस्तीपुर
v) गया

* न्युनतम ग्रामीण जनसं० वाले जिले -
i) शेखपुरा (5, 27, 340)
ii) शिवहर
iii) अरवल
iv) लखीसराय
v) मुंगेर

* सर्वाधिक ग्रामीण जनसं० प्रतिशत में –

i) समस्तीपुर (96.53%)
ii) बाँका (96.50%)
iii) मधुबनी [96.40%]
iv) कैमूर [95.97%)
v) शिवहर [95.72%]

* शहरी जनसं० –

बिहार की कुल शहरी जनसं० 1,17,58,016 (11.29%) जिसमें पुरुषों की जनसं० 62,04,360 है। महिलाओं की सं० 55,53,709 है।

सर्वाधिक शहरी जनसं० वाले जिले –

i) पटना (28,14,590)
ii) भागलपुर [6,02,532]
iii) गया [5,81,601]
iv) बेगुसराय [5,69,823]
v) मुजफ्फरपुर [4,73,437]

न्यूनतम शहरी जनसं० वाले जिले –

i) शिवहर (28,116)
ii) अरवल
iii) कैमूर
iv) खगड़ीया
v) मधेपुरा

* सर्वाधिक शहरी जनसं० प्रतिशत में -

i) पटना (43.7%)
ii) मुंगेर (27.79%)
iii) भागलपुर (19.83%)
iv) बेगुसराय (19.18%)
v) शेखपुरा (17.13%)

न्युनतम शहरी जनसं० प्रतिशत में -

i) समस्तीपुर (3.47%)
ii) बाँका (3.50%)
iii) मधुबनी (3.60%)
iv) कैमुर (4.3%)
v) शिवहर (4.28%)

* बिहार की शिशु जनसं० (0-6 वर्ष) -

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बिहार की कुल शिशु जनसं० 1,51,33,964 है। इसमें बालकों की सं० 98,87,239 तथा बालिकाओं की सं० 92,46,725 है।

* शिशु जनसंख्या के संदर्भ में सर्वाधिक जनसं० वाला पुर्वी चम्पारण है। जबकि न्युनतम जनसं० वाला जिला शेखपुरा है।

* जनसंख्या घनत्व बिहार की जनसं० घनत्व 2011 की जनगणना के अनुसार 1,106 है। यह राष्ट्रीय जनघनत्व से 724 अंक अधिक है। यह भारत का सर्वाधिक सघन बसा हुआ राज्य है। इस संदर्भ में बिहार का द्वितीय (1880) स्तर पर है। जबकि कैमूर न्यूनतम 488 स्तर पर है।

लिंगा अनुपात —

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बिहार का लिंगा अनुपात 918 है। बिहार का सर्वाधिक लिंगाअनुपात वाला जिला गोपालगंज और सबसे न्यूनतम मुंगेर है। बिहार का शिशु लिंगाअनुपात 935 है।

साक्षरता दर —

2011 की जनगणना के अनुसार बिहार की साक्षरता दर 61.80% है। इसमें पुरुषों का साक्षरता दर 71.2% है। तथा महिलाओं की 51.5% है।

बिहार में सर्वाधिक साक्षरता दर रोहतास (73.37%) तथा न्यूनतम साक्षरता दर ~~(51.08%)~~ पुर्णीया (51.08%) है।

अनुसूचीत जाति :—

2011 की जनगन्ना के अनुसार कुल जनसंख्या 1,65,67,325 है। यह राज्य की कुल जनसं० का 15.9% है। जिसमें सर्वाधिक जनसं० गया तथा न्युनतम जनसं० किशनगंज में है।

अनुसूचीत जनजातियाँ —

2011 की जनगन्ना के अनुसार बिहार की कुल अनुसूचित जनजाति की संख्या 13,36,573 है।

✓ सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति के लोग पश्चिमी चम्पारण में रहते है, और सबसे कम शिवहर में है।

धार्मिक जनगन्ना —

धार्मिक जनगन्ना 2011 के आँकड़े के अनुसार हिन्दुधर्म के ~~मानने~~ मानने वाले लोग सर्वाधिक है। बिहार की कुल आबादी का 82.70% है। इसके अलावे अन्य धर्म मुस्लिम 16.86%, ईसाई 0.12%, बौद्ध धर्म 0.02% सिख 0.02%, जैन 0.02% और अन्य 0.01% है।

BIHAR :- Tourism

बिहार के प्रमुख पर्यटन स्थल —

i) बोधगया — इसे उरुवेला के नाम से भी जाना जाता है। यह फल्गु नदी के तट पर स्थित है। यहीं पर भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ती हुई थी। Unesco द्वारा बोधगया अवस्थित महाबोधी मंदिर को जुलाई 2002 में विश्व विरासत स्थल के रूप में घोषित किया गया।

ii) वैशाली — वैशाली जैनधर्म के 24वें तिर्थंकर महावीर स्वामी की जन्म स्थली है। वैशाली में ही बौद्धधर्म का द्वितीय सम्मेलन कालाशोक के नेतृत्व में हुआ था।

iii) पटना — पाटलिपुत्र की स्थापना का श्रेय हरियंक वंश ~~के~~ ~~शासक~~ शासक उदयन को जाता है। जबकि आधुनिक पटना का नामकरण 16वीं शताब्दी में शेरशाह सुरी द्वारा किया गया।

पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीती अशोक के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। गुरु गोविन्द सिंह का जन्म जो सिखों के 10वें गुरु थे। पटना में सन 1666 में हुआ।

iv) नालंदा — अंतराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा एवं ज्ञान केन्द्र नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमार गुप्त द्वारा की गई थी। यहीं पर चीनी यात्री ह्वेंगसान ने 12 वर्षों तक बौद्ध धर्म से संबंधीत शिक्षा ग्रहण की।

v) राजगीर — प्राचीन काल में राजगीर का नाम गिरिव्रज था। यह सबसे बड़ा साम्राज्य मगध की राजधानी थी। प्रथम बौद्धसंगीति अजातशत्रु के नेतृत्व में ही संपन्न हुई। राजगीर में पर्यटन की दृष्टि से विश्वशान्ति स्तुप बहुत सराहनीय है। यहाँ आज भी विरासत के तौर पर गर्म जल के झरने भी मिलते हैं।

* बिहार राज्य में परिस्थितिक एवं वन्यजीव पर्यटन स्थल जो वन्य जीवों की सुरक्षा के साथ-साथ आन्तरिक एवं बाह्य पर्यटकों को आकर्षीत करता है।

i) भीमबाँध वन्य जीव अभ्यारण (मुंगेर)
ii) कावर झील (बेगुसराय)
iii) गंगाजील पक्षी विहार (कटिहार)
iv) घोड़ाकटोरा झील (राजगीर)

v) गौतम बुद्ध पक्षी विहार (गया)
vi) डॉल्फीन अभ्यारण (भागलपुर)
vii) वाल्मीकि नैशनल पार्क (पश्चिमी चम्पारण)

बिहार में स्थित धार्मिक पर्यटन स्थल	अवस्थित जिला
• चैतन्य महाप्रभु मंदिर, काली स्थान अन्नपुर्णा मंदिर, बिड़ला मंदिर, शीतला मंदिर, हरिहर मंदिर, इमामबाड़ा पत्थर की मस्जिद, फुलवारी शरीफ का खानकाह, पादरी की हवेली, गुरुद्वारा हेडी साहिब, बड़ी पटन देवी मंदिर, छोटी पटन देवी मंदिर	पटना
• देवी मंदिर (सूर्य मंदिर) चंडीस्थान	औरंगाबाद
• कमल सरोवर, सिद्धेश्वर महादेव मंदिर विष्णु मंदिर	गया
• मंदारगिरी पर्वत	बाँका
• नेपाली मंदीर, हजरत जन्दाहा का मकबरा	हाजीपुर

अजगैबी नाथ का मंदिर	भागलपुर (सुल्तानगंज)
राम - जानकी मंदिर	सीतामढ़ी
मामू - भांजा मजार	वैशाली
मुंडेश्वर मंदिर	भभुआ (कैमूर)
शेरशाह का मकबरा	रोहतास (सासाराम)

पुरातात्विक स्थल

i) एकसारा, अल्हाना, मलिक इब्राहिम बयां की मजार	नालंदा
ii) लोरिकडीह, चक, राज परिसर	दरभंगा
iii) राजनगर, पस्तान नवटोली, मोरगगंढहरी प्राचीनगढ़	मधुबनी
iv) काली मंदिर, ताराडीह, शोमनाथ पहाड़ी	गया
v) जमालुद्दीन चक, वेणु हजाम की मस्जिद	पटना
vi) उमगा, दाऊद खाँ का किला, शेरशेर खाँ की मजार	औरंगाबाद

vii)	महेशिया	सीतामढ़ी
viii)	पातालपुरी गुफा, शिलामूर्ति समूह खैरी	भागलपुर
xi)	इमनशाह की मजार, अलावल खाँ का मकबरा	रोहतास

हिंदू धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल	जिला	विशेषता / महत्व
चौमुखी महादेवी	वैशाली	प्राचीन शिवलिंग, जहाँ पूजा - अर्चना की जाती है।
महावीर मंदिर	पटना	लगभग 400 वर्ष पुराना मंदिर जो पटना साहिब में अवस्थित बेगमपुर के जल्ला क्षेत्र में स्थित है।
हनुमान मंदिर	पटना	पटना जंक्शन के पास, भव्य स्वरूप
राम-जानकी मंदिर	सीतामढ़ी	त्रेतायुग की पौराणिक कथा के अनुसार सीता की जन्मभूमि, जहाँ प्रतिदिन मेले लगते हैं।
अन्नपूर्णा मंदिर	पटना	अति प्राचीन मंदिर